हिन्दी दलित साहित्य

विमर्श के आईने में

संपादक :

डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

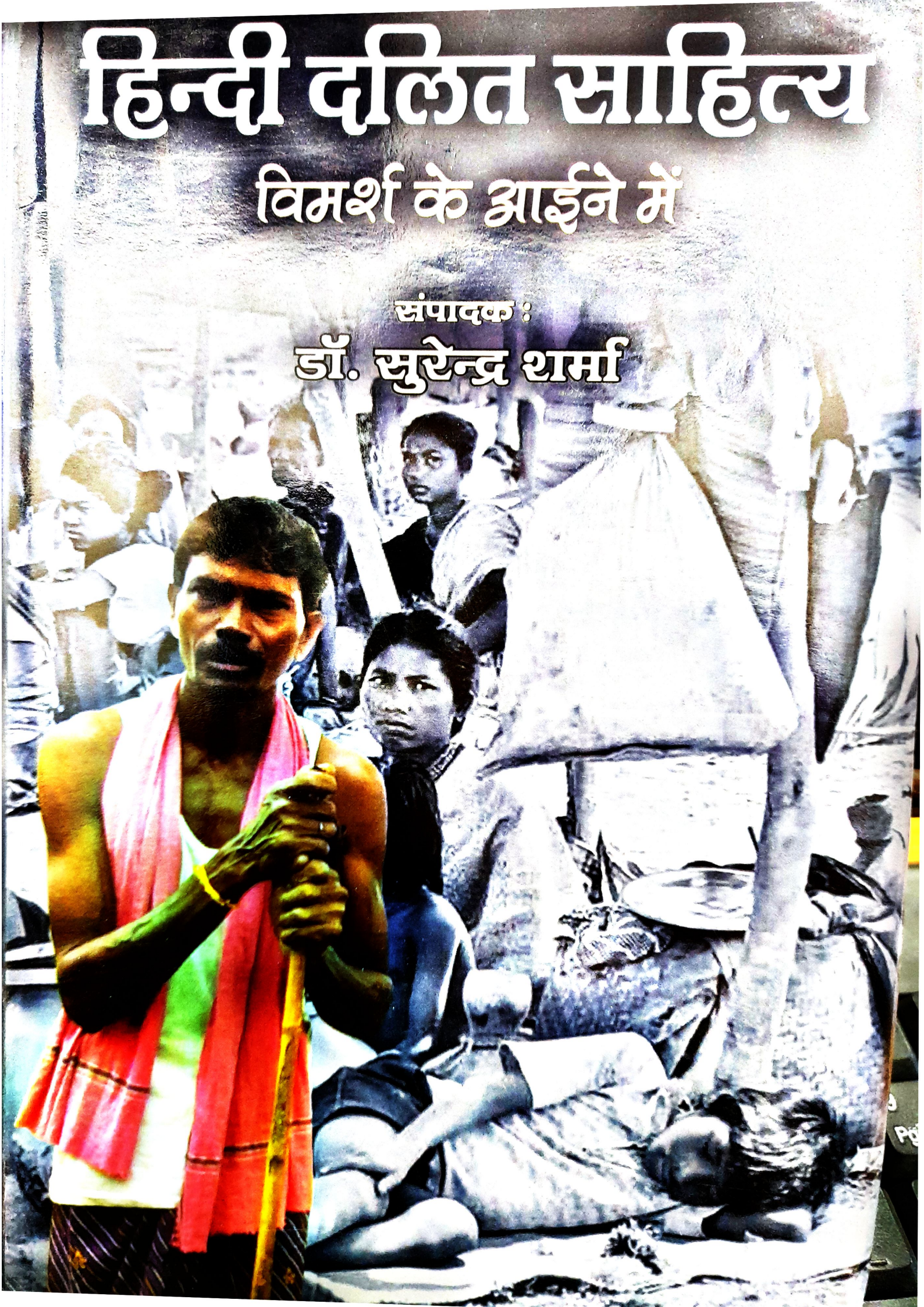

ISBN : 978-81-953548-8-7

© : संपादक

प्रकाशक : मनीष पब्लिकेशन्स
471/10, ए ब्लॉक, पार्ट-2
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
Email : manishpublications@gmail.com
मोबाइल : 9968762953

मूल्य : ₹ 700/-

प्रथम संस्करण : 2021

शब्द संयोजन : सुनील कंप्यूटर्स, दिल्ली

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट
दिल्ली-110093

HINDI DALIT SAHITYA : VIMARSH KE AAINE MEIN
by Dr. Surender Sharma

विषयानुक्रम

प्राक्कथन	पृष्ठ सं0
1. हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श —डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	17
2. दलित कहानियाँ समय की सही पड़ताल —डॉ. ओम प्रकाश सैनी	26
3. जीवन यथार्थ का दस्तावेज : जूठन —डॉ. नरेश कुमार	34
4. अज्ञेय के साहित्य में दलितोंन्मुख चेतना —डॉ. राजन तनवर	43
5. दलित वर्ग की अभिव्यक्ति और दलित अस्मिता के प्रश्नः "चमार की चाय" के संदर्भ में —सारिका ठाकुर	47
6. दलित साहित्य के अग्रदूत गुरु रविदास वाणी में विलक्षणता —डॉ. हरप्रीत कौर	56
7. दलित साहित्य : अवधारणा एवं स्वरुप —वंदना राणा	62
8. समकालीन हिंदी कविता में दलित स्त्री का आक्रोश —प्रो. रेखा.पी.मेनोन	68
9. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलितों की सामाजिक स्थिति —प्रो. मनोज कांबले	80
10. दलित साहित्य की अवधारणा —रघुवीर सिंह	88
11. मोहनदास नैमिशराय के साहित्य में दलित क्रान्ति के स्वर —डॉ. हिमेन्द्र पाल काशव	96
12. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित स्त्री विमर्श —डॉ. ममता	102
13. दलित काव्य में नारी की स्थिति —डॉ. कमला देवी	110
14. नागार्जुन कृत हरिजनगाथा कविता में दलित-चेतना —डॉ. कमल बाई	114

दलित कहानियाँ समय की सही पड़ताल

डॉ. ओम प्रकाश सैनी (डी. लिट्)
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. (पी.जी.) कॉलेज,
कैथल, हरियाणा।

भारतीय साधना के इतिहास में 'दलित' शब्द का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। यहां तक की हमारे संविधान में भी इस शब्द का उल्लेख कहीं नही। हां, आजाद भारत में संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य डॉ. भीमराव अंबेडकर ने यदा-कदा अपने संभाषणों में इस शब्द का प्रयोग अवश्य किया है। ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने अंग्रेजों से प्रभावित होकर 'डिप्रेस्ड क्लास' के वंचित वर्गों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया है। सन 1929 में महाप्राण निराला के काव्य संग्रह 'अणिमा' में प्रकाशित कविता की कुछ पंक्तियों में 'दलित' शब्द का उल्लेख हुआ हैं ''दलित जन पर करो करूणा। दीनता पर उतर आये प्रभु, तुम्हारी शक्ति वरुणा।'' भारत में आजादी के बाद सन 1972 में महाराष्ट्र में अफ्रीकी-अमेरिकी ब्लैक पैंथर आंदोलन से प्रभावित होकर दलित पैंथर्स मुंबई नाम का एक सामाजिक-राजनीतिक संगठन बनाया गया जिसका नेतृत्व नामदेव ढसाल, राजा ढाले और अरुण काम्बले जैसे नेताओं ने किया। यहीं से 'दलित' शब्द को महाराष्ट्र में सामाजिक स्वीकृति मिल गई। उत्तर भारत में दलित शब्द को प्रचारित करने का श्रेय बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक स्व. कांशीराम को है जिन्होंने (डी. एस. 4) ठाकुर, ब्राह्मण और बनिया को छोड़ उत्तर भारत मे पिछड़ों तथा अति पिछड़ों को दलित कहा और अब लगभग समस्त भारत में यह शब्द अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। हमारे यहां कालांतर में यह शब्द क्रमशः शूद्र, अछूत, हरिजन आदि के लिए प्रयुक्त होने लगा है। आजकल राजनीति के कारण अन्य पिछड़े वर्गों तथा अनुसूचित जाति के लिए भी यह शब्द धड़ल्ले से चल निकला है। 'दलित' शब्द का सामान्य अर्थ है जिसका दलन हुआ हो। वर्तमान में यह शब्द आधुनिक मनीषियों, चिंतको, मीडियाकर्मियों, कवि, आलोचकों अथवा महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों में उच्च पदों पर आसीन मठाधीशों के हाथ लग गया है जिन्होंने मौके-बे-मौके अपने निहित स्वार्थों के लिए इसका जबरन इस्तेमाल किया है। साहित्य में अब अन्य विमर्शों के साथ-साथ दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श भारतीय साहित्य विशेषकर हिंदी साहित्य के केन्द्र में है। भारतीय समाज प्रारंभ से ही जातिमूलक रहा है। भिन्न, धर्मों, जातियों, वर्णों एवं सम्प्रदायों के इस देश मे जातिगत विषमताएं रहीं हैं। जातीय समीकरण,